भगवति माँ की आरती

आरति भगवति माँ की कीजै,जय जय जननि जगद्गुरु की जय ।

सुकृत कौन अस वेद बतायो,
जासों लाल कृपालुहिं पायो ।
बनि जननी निज गोद खिलायो,
सब विधि हलरायो दुलरायो ।
मोहिं निज सुत सेवा वर दीजै,जय जय जननि जगद्गुरु की जय ।
आरति भगवति माँ की.......॥.

तेरो सुत मानत सब तेरो,
माँ इक काम करा दे मेरो ।
मोहिं सो ले बनाय निज चेरो,
रहिहौं ऋणी तोर बहुतेरो ।
माँ हौं हूँ तव सुत सुनि लीजै,जय जय जननि जगद्गुरु की जय ॥
आरति भगवति माँ की......॥

बोलिए शाश्वती भास्वती श्रीमती सौभाग्यवती भगवती मैया की जय ।

भावार्थ

आइए सब मिल कर संत शिरोमणि जगद्गुरु श्रीकृपालु सरकार की परम सौभाग्यवती माँ, भगवती मैया की आरती उतारें ।

हे माँ! तुमने वेदों के द्वारा बताया ऐसा कौन सा पुण्य किया,जिससे तुम्हें कृपालुजैसे दिव्य पुत्र की प्राप्ति हुई ? उनकी माँ बन कर उन्हें गोद में खिलाने का एवं सब प्रकार से लाड़ प्यार एवं दुलार देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ । माँ मुझे ऐसा वरदान दो कि मुझे तुम्हारा सुपुत्र अपनी सेवा प्रदान करे ।

तुम्हारा पुत्र तुम्हारी आज्ञा का पूर्णतया पालन करता है, इसलिए हे माँ! मेरा एक काम बना दो । अपने पुत्र से मेरी सिफ़ारिश कर दो कि वे मुझे अपनी दासता प्रदान करें । इस उपकार का मैं तुम्हारा सदा ऋणी रहूँगा । माँ, मैं भी तो तुम्हारा पुत्र हूँ,मेरी इस प्रार्थना को अवश्य स्वीकार करो ।